एनिवर्सरी स्पेशल

वर्षः 2 | पत्रिका अंकः 2 एनिवर्सरी स्पेशल अक्टूबर 2020

... ताकि लॉकडाउन में लॉक न हो पढ़ाई

मुश्किल वक्त में डिजिटल लर्निंग ने दिया शिक्षा का उपहार

"स्कूल बंद है पर इंटरनेट की मदद से मेरी शिक्षा जारी रही।" गोड्डा की 16 वर्षीय **नेहा** ने जब यह बताया तो उसके चेहरे पर आत्मविश्वास था जो डिजिटल लर्निंग ने दिया है। मार्च 2020 में लॉकडाउन के साथ पूरे भारत में 15 लाख विद्यालय बंद हो गए और 28.6 करोड़ बच्चों का विद्यालय जाना बंद हो गया। ऐसे वक़्त में झारखण्ड के शिक्षा विभाग ने Digi-SATH योजना बनाई। मई 2020 से Whatsapp एवं दूरदर्शन द्वारा शैक्षणिक सामग्री बच्चों तक पहुँचने लगी। शिक्षकों ने बच्चों को Whatsapp ग्रुप से जोड़ा और गृहकार्य देने लगे। क्लास के लिए "ज़ूम" और "गूगल मीट" जैसी तकनीक का इस्तेमाल शुरू हुआ। अभी रोजाना दो विषयों की 80 मिनट क्लास होती है।

आई.सी.आर.डब्ल्यु. का सर्वेक्षण बताता है कि गोड्डा और जामताड़ा के 209 गाँवों में 94 प्रतिशत किशोरियों के पास ख़ुद का फोन नहीं है। लड़कियों को घर में मौजूद फोन सीमित समय के लिए ही मिलता है।

ऐसे में Digi-SATH अच्छा विकल्प बनकर उभरा है। गोड्डा के जमनिपहाड़ विद्यालय में दसवीं की छात्रा **रूबी** बताती हैं, "अगर Digi-SATH नहीं होता तो हमारी पढ़ाई ठप हो जाती।"

झारखण्ड सरकार में समग्र शिक्षा के राज्य समन्वयक **अविनव कुमार** बताते हैं, "हम इंटरनेट से 35 प्रतिशत बच्चों तक पहुँच रहे हैं। मई में 10 लाख बच्चे Digi-SATH से जुड़े थे। आज Whatsapp और दूरदर्शन के माध्यम से 20 लाख बच्चे जुड़े हैं। हमने शिक्षकों के माध्यम से अभिभावकों को प्रेरित करने की कोशिश की ताकि जिनके घरों में टेलीविज़न है, वे अन्य बच्चों को भी दूरदर्शन के माध्यम से Digi-SATH की कक्षा में शामिल करवाएँ। साथ ही, जिन पंचायत भवनों में टेलीविजन हैं, वहाँ भी पंचायत मुखिया के माध्यम से बच्चों को कक्षा से जुड़ने के लिए प्रेरित किया जा रहा है।"

जामताड़ा के ज़िला शिक्षा पदाधिकारी **अभय शंकर** के मुताबिक, "लॉकडाउन का समय आत्मनिरीक्षण का था। विभाग ने इस चुनौती का सामना करते हुए डिजिटल लर्निंग को अपनाया।"

> "वर्तमान में कोविड–19 जैसी वैश्विक महामारी की स्थिति में शिक्षण कार्य पर प्रतिकूल असर पड़ा है। स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, झारखण्ड ने इस चुनौती को स्वीकार करते हुए दूरदर्शन, Digi–SATH-DIKSHA portal, WhatsApp एवं अन्य वैकल्पिक माध्यमों से छात्र–छात्राओं को शिक्षा सुलभ कराया जा रहा है, ताकि किसी भी परिस्थिति में शिक्षण कार्य बाधित ना हो।"
>
> **जटा शंकर चौधरी**
> **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा,**
> **झारखण्ड, रांची**

उमंग परियोजना के अंतर्गत भी Digi-SATH को कार्यान्वित करने के लिए गोड्डा और जामताड़ा के 68 विद्यालयों में सर्वेक्षण किया गया और वर्तमान में Digi-SATH की पहुँच को बढ़ाने के प्रयास किए जा रहे हैं। सर्वेक्षण में पता चला कि शिक्षा से जुड़े रहने में किशोरियों को दिक्कतें आ रही हैं। वर्तमान में काम छूट जाने से जहाँ उनके परिवारों की आर्थिक स्थिति बिगड़ी है, वहीं घरेलू हिंसा भी बढ़ी है।

कई सर्वेक्षण में यह बात भी सामने आई कि आने वाले समय में किशोरियां छिजित (ड्रॉपआउट) हो जाएँगी और बाल व्यापार, बाल विवाह जैसे खतरे बढ़ेंगे। अतः Digi-SATH को प्रभावी तरीके से चलाया जाना और उसे मज़बूत बनाना ज़रूरी है। उमंग कार्यकर्ता इसकी सफलता के लिए प्रयासरत हैं ताकि नेहा और रूबी जैसी तमाम लड़कियाँ इससे जुड़कर शिक्षा जारी रखने के साथ–साथ अपने सपनों को उड़ान दे पाएँ।

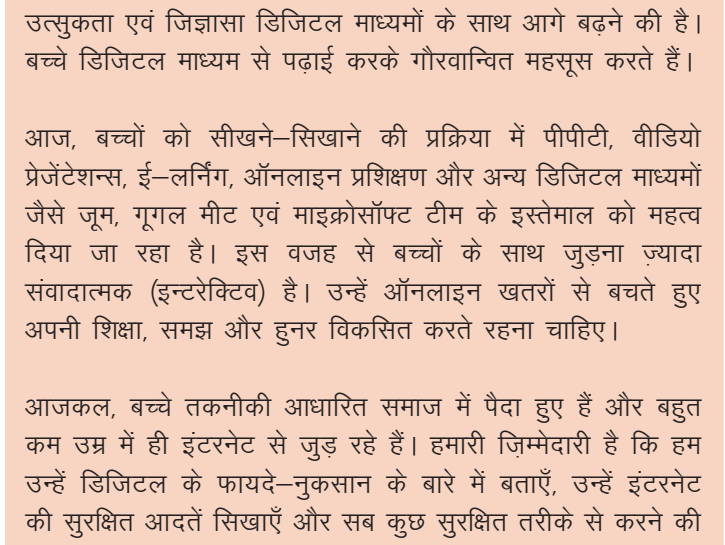

प्रिय पाठकों,
जोहार!

मुझे आपको यह बताते हुए बहुत हर्ष हो रहा है कि उमंग वाणी ने अपना एक साल पूरा कर लिया है। अब उमंग वाणी वार्षिक संस्करण लेकर आया है। इसके नियमित प्रकाशन में आप सभी का सहयोग एवं मार्गदर्शन मिलता रहा है। पिछले कुछ समय में कोविड के असर के कारण लोग डिजिटल की ओर ज़्यादा आकर्षित हो रहे हैं। इसे हमें सकारात्मक नजरिए से देखने की ज़रूरत है। शिक्षा को जारी रखने के लिए बच्चे और शिक्षक डिजिटल माध्यम से जुड़ रहे हैं। यहाँ यह बात भी गौर करने वाली है कि ग्रामीण क्षेत्र के ज़्यादातर बच्चे डिजिटल माध्यम से अपनी पढ़ाई जारी रखने में बाधा महसूस कर रहे हैं। इसके अलग–अलग कारण हो सकते हैं, लेकिन यह भी सत्य है कि बच्चों की उत्सुकता एवं जिज्ञासा डिजिटल माध्यमों के साथ आगे बढ़ने की है। बच्चे डिजिटल माध्यम से पढ़ाई करके गौरवान्वित महसूस करते हैं।

आज, बच्चों को सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में पीपीटी, वीडियो प्रेजेंटेशन्स, ई–लर्निंग, ऑनलाइन प्रशिक्षण और अन्य डिजिटल माध्यमों जैसे जूम, गूगल मीट एवं माइक्रोसॉफ्ट टीम के इस्तेमाल को महत्व दिया जा रहा है। इस वजह से बच्चों के साथ जुड़ना ज़्यादा संवादात्मक (इन्टरेक्टिव) है। उन्हें ऑनलाइन खतरों से बचते हुए अपनी शिक्षा, समझ और हुनर विकसित करते रहना चाहिए।

आजकल, बच्चे तकनीकी आधारित समाज में पैदा हुए हैं और बहुत कम उम्र में ही इंटरनेट से जुड़ रहे हैं। हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम उन्हें डिजिटल के फायदे–नुकसान के बारे में बताएँ, उन्हें इंटरनेट की सुरक्षित आदतें सिखाएँ और सब कुछ सुरक्षित तरीके से करने की तालीम दें। झारखण्ड शिक्षा विभाग ने स्कूली शिक्षा के लिए छात्र और शिक्षकों के लिए Digi-SATH प्लेटफॉर्म के माध्यम से डिजिटल क्लास की शुरुआत की है। बच्चे इस क्लास से अधिक से अधिक संख्या में जुड़ने की कोशिश का रहे हैं। इस तरह उन्होंने अपनी पढ़ाई का क्रम जारी रखा है।

डिजिटल शिक्षा अब हमारे जीवन का एक अंग बन चुकी है। अगर हम डिजिटल लर्निंग चाहते हैं, तो हमें अपने स्कूलों और शिक्षकों को इंटरनेट के तमाम संसाधनों से लैस करना होगा।

डॉ.नसरीन जमाल, प्रोजेक्ट चीफ,
उमंग कार्यक्रम, आई.सी.आर.डब्लयु.

महामारी के दौरान बढ़ते बाल संरक्षण मुद्दों पर विभागीय कार्य योजना

गोड्डा जिले के अमरपुर गाँव में रहने वाली 13 साल की रिंकी की शादी खेलने–कूदने की उम्र में तय कर दी गई। रिंकी माता–पिता के इस फैसले से दुखी थी। वह पढ़ना और आगे बढ़ना चाहती थी। रिंकी ने किसी तरह हिम्मत जुटाकर उमंग कार्यक्रम द्वारा किशोरी सशक्तिकरण के लिए गठित समूह से अपना दर्द साझा किया। इसके बाद समूह की किशोरियों ने समूह की दीदी के साथ मिलकर रिंकी के पिता को समझाया और उन्हें रिंकी को पढ़ने का मौका देने के लिए राज़ी कर लिया।

फिलहाल रिंकी की शादी रुक गई है, लेकिन उस जैसी बहुत–सी किशोरियां लॉकडाउन से पैदा हुए हालात में बाल विवाह और मानव व्यापार का शिकार हो गईं। कोविड–19 के दौरान बढ़ रहे बाल विवाह, बाल श्रम और बाल शोषण की खबरें आएदिन अख़बारों में छप रही हैं। यह देखते हुए गोड्डा के प्रखंड विकास पदाधिकारी ने उमंग टीम के सदस्यों से संपर्क साधा। उमंग प्रतिनिधियों ने उन्हें प्रखंड बाल संरक्षण समिति के बारे में सूचित किया। साथ ही बताया कि इसमें उन सभी महत्वपूर्ण विभागों की सदस्यता है जो बच्चों और किशोरों के मुद्दों पर संज्ञान ले सकते हैं। इसके बाद गोड्डा प्रखंड विकास पदाधिकारी ने त्वरित कार्यवाही करते हुए ज़िला बाल संरक्षण इकाई और उमंग के संयुक्त तत्वावधान में गोड्डा में प्रखंड बाल संरक्षण समिति की पहली बैठक आयोजित कराई।

बैठक की अगुवाई ज़िला बाल संरक्षण पदाधिकारी, गोड्डा **श्री रितेश कुमार** द्वारा की गई। उन्होंने बताया, **"इस विकट परिस्थिति में बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करने में बाल संरक्षण समितियों की अहम भूमिका है। ज़िला बाल संरक्षण इकाई गोड्डा स्थानीय संस्थाओं और विभागों के साथ मिलकर कार्य कर रही है ताकि गठित समितियां सशक्त हों व बच्चे सुरक्षा चक्र में बने रहें।"**

बैठक में बाल विवाह एवं बाल शोषण के बढ़ रहे मामलों पर चिंता व्यक्त करते हुए बीडीओ ने ग्राम बाल संरक्षण समिति को सशक्त करने को कहा। साथ हीं जिन स्थानों पर समिति का गठन नहीं हुआ है, वहाँ अविलंब समिति गठित करने की अधिसूचना भी जारी की।

गौरतलब है कि उमंग कार्यक्रम के तहत उमंग कार्यक्षेत्र की सभी आँगनबाड़ी में वर्ष 2019–2020 में ग्राम बाल संरक्षण समिति को पुनर्गठित और सक्रिय कर नियमित बैठकें सुनिश्चित की जाती रही हैं। साथ ही, संवेदनशील बच्चों की पहचान कर उनकी सूची विभाग तक पहुँचाने का प्रयास किया जाता रहा है। 23 जून 2020 को हुई इस बैठक में उमंग के गतिविधियों की सराहना कर समिति ने कुछ महत्वपूर्ण निर्णय लिए और साथी संस्था के उमंग परियोजना समन्वयक को प्रखंड बाल संरक्षण के सदस्यों का एक Whatsapp ग्रुप बनाने की ज़िम्मेदारी दी। इसके अलावा हर माह के अंतिम शनिवार को बैठक करने और इसकी रिपोर्ट तैयार करने की ज़िम्मेदारी भी उमंग परियोजना समन्वयक को दी गई। आशा है कि उमंग की पहल और बाल संरक्षण समिति की सतर्कता से किशोरियों के सपने पूरे होंगे और उन्हें बाल विवाह के अभिशाप से मुक्ति मिलेगी।

उमंग का झारखण्ड सरकार के शिक्षा विभाग के साथ सहयोग

कोविड–19 आपदा के दौरान उमंग टीम झारखण्ड के शिक्षा विभाग के साथ Digi-SATH कार्यक्रम में सहयोगी के रूप में जुड़ी। उमंग ने कार्यक्रम के तहत छात्रों को भेजी जाने वाली पठन सामग्री तैयार करने में अहम भूमिका निभाई। साथ ही, गोड्डा एवं जामताड़ा ज़िले के 71 स्कूलों से 1,218 शिक्षकों एवं 5,565 छात्रों से संपर्क कर Digi-SATH से जुड़ने में मदद की। उमंग टीम ने 92 शिक्षकों के साथ कोविड के हालात पर डिजिटल सत्र आयोजित करते हुए लगभग 12,000 छात्रों को कार्यक्रम से जोड़ने की रूपरेखा बनाई। इसके अलावा 224 ड्रॉपआउट किशोरियों का पुनः नामांकन करवाया एवं 67 पात्र किशोरियों को कस्तूरबा विद्यालय में नामांकन के लिए भेजा।

डिजिटल लर्निंग एवं प्रोग्रेस

उमंग टीम ने अपने 132 फील्ड स्टाफ को डिजिटल कार्यशाला के माध्यम से निरंतर प्रशिक्षित करते हुए न सिर्फ पूरे हुए कार्यक्रम का मूल्यांकन किया, बल्कि उनकी कार्यक्षमता को भी बढ़ाया। साथ ही, फील्ड स्टाफ के माध्यम से डिजिटल सर्वे करते हुए लॉकडाउन के दौरान समुदाय के हालात की जानकारी ली। टीम ने सामाजिक दूरी का पालन करते हुए डिजिटल माध्यम से 13,665 किशोरियों को कोविड सुरक्षा की पूरी जानकारी दी। इस दौरान दीदी किचन, बागवानी, जलाशयों की खुदाई, खेल मैदानों का समतलीकरण, मनरेगा के लिए जॉब कार्ड जैसे सामाजिक कार्यों में भरपूर सहयोग किया। टीम ने डिजिटल माध्यम से पुरुषों और किशोरों तथा किशोरियों की लिए सामूहिक शिक्षा सत्रों की पाठ्यक्रमों का निर्माण, व सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का संकलन किए।

जटिल समस्याओं के अभिनव समाधान

ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं तक स्मार्टफोन और इंटरनेट की पहुँच सीमित होती है। उमंग की सहयोगी टीम पीसीआई ने जेएसएलपीएस की मदद से महिलाओं को जागरूक किया। गोड्डा सदर व नाला प्रखंड की 260 स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) की लीडर (सक्रिय दीदी) ने कोरोना से बचाव व भेदभाव न करने से संबंधित विषयों पर चार महीने नियमित दूर–सभा के माध्यम से प्रशिक्षण दिया। समूह की सदस्य महिलाओं को किशोरी स्वास्थ, पोषण एवं माहवारी, लॉकडाउन और उसके बाद की जीवनशैली, कोविड–19 के कारण होने वाले भेदभाव जैसे विषयों की जानकारी दी गई। सक्रिय दीदियों ने समूहों की लगभग 10,000 सदस्यों और उनके परिवार वालों को कोविड–19 से बचाव हेत प्रशिक्षित किया।

आओ, योजनाओं के बारे में जाने !

उमंग की अगली कड़ी–जेंडर इक्विटी मूवमेंट इन स्कूल्ज़ (जेम्स)

किशोरी सशक्तिकरण के लिए कार्य कर रहे उमंग कार्यक्रम ने हितधारकों के बीच व्यापक रुचि पैदा की है। इससे कार्यक्रम के विस्तार के लिए नए अवसर बने हैं।

आई.सी.आर.डब्ल्यु. के शोध निदेशक **प्रणिता अच्युत** ने बताया, **"हमें यह घोषणा करते हुए प्रसन्नता हो रही है कि उमंग परियोजना के अंतर्गत जेम्स गोड्डा और जामताड़ा ज़िलों के तीन अतिरिक्त प्रखंडों में विस्तारित हो रही है। इस विद्यालय आधारित कार्यक्रम के लिए गोड्डा ज़िले से पोडैयाहाट और पथरगामा प्रखंड एवं जामताड़ा में नारायणपुर प्रखंड का चुनाव किया गया है।"**

जेम्स कार्यक्रम इन तीन प्रखंडों के 201 मिडिल, माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक सरकारी स्कूलों और सीधे 30,000 छात्र–छात्राओं तक पहुँचेगा। साथ ही परोक्ष रूप से 60,000 परिवार के सदस्यों तक भी इसकी पहुँच होगी। यह कार्यक्रम शिक्षकों के नेतृव में चलाया जाएगा। इसके लिए लगभग 500 शिक्षकों की जेंडर (लैंगिक) समानता पर गहरी समझ विकसित की जाएगी।

जेम्स कार्यक्रम झारखण्ड के लिए नया नहीं है। 2014–16 में रांची और खूंटी ज़िलों के 80 विद्यालयों में यह कार्यक्रम सफलतापूर्वक चलाया गया था। कार्यक्रम के अंतर्गत जेंडर आधारित पाठ्यक्रम शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के सहयोग से तैयार किया गया था। उन्हीं अनुभवों और सीखों के आधार पर जेम्स कार्यक्रम गोड्डा और जामताड़ा के 201 विद्यालयों में चलाया जाएगा। कार्यक्रम के अंतर्गत कक्षा 6 से 11वीं तक के छात्र–छात्राओं के लिए जेंडर भेदभाव, हिंसा, शिक्षा, रोजगार, बाल विवाह, स्वयं की पहचान और प्रभावी संवाद जैसे विषयों पर सत्र आयोजित किए जाएँगे। इसके अलावा खेल गतिविधियों के लिए छात्रों को प्रेरित करना, उनमें नेतृत्व कौशल का निर्माण करना, लड़कियों को सार्वजनिक स्थानों पर खेलने को बढ़ावा देना और उनमें आत्मसम्मान और आत्मविश्वास बढ़ाना भी इस कार्यक्रम का हिस्सा होगा। स्कूल आधारित अभियान चलाकर खेल एवं चित्र प्रतियोगिताएँ आयोजित होंगी। इसके अलावा बाल संसद की क्षमता में वृद्धि, विद्यालय प्रबंधन समितियों (एसएमसी) को अधिक सक्रिय बनाने और अभिभावक–शिक्षक बैठकों (पीटीएम) को प्रभावी बनाने का भी प्रयास किया जाएगा। साथ ही लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए गुरू गोष्ठी जैसे मंचों का उपयोग भी कार्यक्रम का हिस्सा होगा।

विद्यार्थियों के नेतृत्व में "जेंडर ऑडिट" का आयोजन भी कार्यक्रम का हिस्सा है। इसके अंतर्गत असुरक्षित स्थानों की पहचान की जाएगी। छात्र आवश्यक कार्रवाई के लिए ऑडिट से प्राप्त निष्कर्षों को विद्यालय प्रबंधन समिति के सामने पेश करेंगे। आरसीआरडब्ल्यू, साथी और बदलाव फॉउण्डेशन विद्यार्थियों और शिक्षकों की मदद से कार्यक्रम का दस्तावेज़ीकरण और मूल्यांकन भी करेंगे।

यह परियोजना लड़कियों की शिक्षा एवं लैंगिग समानता को बढ़ावा देने वाली नीतियों और कार्यक्रमों को प्रभावित करने के साथ–साथ हमें और हमारी सहभागी संस्थाओं को और सक्षम बनाएगी। **प्रणिता** ने बताया, **"हम झारखण्ड में लड़कियों, लड़कों और समुदाय के सदस्यों के बीच बड़े बदलाव लाने के लिए सरकार और स्थानीय भागीदारों के साथ मिलकर कार्यक्रम को संचालित करने के लिए बहुत उत्साहित हैं।"**

लक्ष्य की तरफ बढ़े कदम

बदल लो खुद को समय के साथ, या समय बदलना सीख लो, कभी न हारो अपनी मजबूरी से, हर हाल में चलना सीख लो।

मेरा नाम दयावंती है। मैं दलदली तोयोटोला में रहती हूँ। माता–पिता मज़दूरी करते हैं। मेरा नामांकन हाई स्कूल घाट बंका में हुआ था। घर में मुझे जानवरों की देखभाल करनी पड़ती थी, इसलिए स्कूल जाना लगभग छूट चुका था। सारा समय गाय चराने में ही गुज़रता था। पिताजी कहते थे, "स्कूल जाकर क्या करोगी? गाय चराओ। पहले खाने के बारे में सोचो। सबका पेट भरे, इतना ही काफी है।" उनके डर से मैं स्कूल नहीं जाती थी। मुझे लगने लगा था कि घर का काम करने और गाय चराने के अलावा मेरी ज़िंदगी में कुछ नहीं है। जब मेरी सहेलियाँ स्कूल जाती थीं, तब उनको देखकर लगता था कि शायद मेरी किस्मत में स्कूल जाना लिखा ही नहीं है। फिर गाँव में उमंग की क्लास शुरू हुई जिसमें मेरी उम्र की सभी लड़कियाँ जाने लगीं। मुझे जाने में हिचक होती थी। सोचती थी कि सब यह कहकर मजाक उड़ाएँगे कि मैं स्कूल नहीं जाती। जब उमंग की क्लास के बाद सबको खेलते हुए देखती तो मेरा भी खेलने का मन करता था। उन्हें देखकर मैं कभी–कभी खेलने चली जाती थी।

एक दिन मेरा खेल देखकर उमंग वाली दीदी ने बुलाकर समझाया कि क्लास में भी बैठो क्योंकि तुम बहुत अच्छा खेलती हो। उन्होंने समझाया कि आगे बढ़ने के लिए खेल के साथ ज्ञान भी जरूरी है। फिर मैं सबके साथ उमंग की क्लास में जाने लगी और क्लास (सत्र) के बाद हमें फुटबॉल भी खेलने को मिलने लगा। फुटबॉल खेलकर बहुत खुशी मिली। इस खेल में शामिल होने के लिए हमें जूते पहनकर आने को बोला गया। मेरे पास स्कूल से मिला जूता था। मैं उसे झोले में डालकर अपनी गायों के साथ मैदान में पहुँच गई। गाय को खेतों में छोड़कर फुटबॉल खेलने लगी, तभी मेरी गाय खाई में गिर गई और मुझे डर लगने लगा कि अब पिताजी बहुत पीटेंगे। इस मौके पर मेरी उमंग टीम ने पूरा साथ दिया और जब तक गाय बाहर नहीं आई, तब तक सब मेरे साथ खड़े रहे। उनके साथ से दूसरे दिन फिर आने की हिम्मत बनी।

दूसरे दिन पापा भी मेरा मैच देखने आए। फुटबॉल खेलते वक़्त पापा को देख कर डर लगने लगा। मन में सोचा कि घर जाकर जमकर पिटाई होगी। जब मैंने अपने इस डर के बारे में मैम को बताया तो उन्होंने कहा, "खेलती रहो। तुम्हारे पिताजी को भी पता चले कि तुम कितनी प्रतिभाशाली हो।" फिर मैं चुपचाप खेलती रही और पिताजी चुपचाप देखते रहे।

अब मैंने फिर से स्कूल जाने और पढ़ाई करने का मन बना लिया है। जब मैं स्कूल के लिए तैयार हुई तो पिताजी ने बिना कुछ बोले मुझे जाने की इजाज़त दे दी और गाय को लेकर खुद खेत चले गए। उस दिन जब यूनिफॉर्म पहनकर मैं स्कूल चली गई, तो वहाँ मुझे उमंग की मैम मिलीं। उन्होंने कहा कि मैं रोज तुम्हें यहां देखना चाहती हूँ और मुस्कुराकर चली गईं।

उमंग ने मुझे आगे जाने के रास्ते तो दिखाए ही, साथ ही मेरे अंदर के सपने को भी जगाया। आज, मैं घर के काम के साथ अपनी पढ़ाई कर रही हूँ और खेल भी रही हूँ। आगे बढ़ने में मेरी मदद के लिए थैंक यू उमंग!

मेरा नाम मनजोकी मुर्मू है। मैं जामताड़ा के नाला प्रखंड के हिजल्जोरी गाँव में रहती हूँ और कस्तूरबा गांधी विद्यालय में छठी कक्षा की छात्रा हूँ। मेरे परिवार में कुल 9 सदस्य हैं। मां और बाबा मज़दूरी कर किसी तरह परिवार का भरण–पोषण करते हैं। मेरी बड़ी बहन की शादी जल्दी कर दी गई। वह 8वीं तक ही पढ़ाई कर सकी। घर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने के कारण पांचवीं के बाद मेरी भी पढ़ाई छूट गई। मेरा पढ़ने का मन था, इसलिए हिम्मत करके गाँव की एक दीदी से निवेदन किया कि वह मेरा नामांकन कस्तूरबा विद्यालय में करवा दें। इसके बाद, मैंने आगे की पढ़ाई शुरू कर दी। मैं पढ़ लिखकर टीचर बनना चाहती हूँ। मेरी इच्छा है कि मैं गाँव की सभी किशोरियों को शिक्षित करूँ। मैं उमंग की क्लास में हमेशा शामिल होती हूँ। यह क्लास मुझे बहुत अच्छी लगती है और इसमें काफी कुछ सीखने को मिलता है।

कस्तूरबा विद्यालय में मेरे नामांकन के बाद गाँव की तीन और किशोरियों ने मुझसे नामांकन प्रक्रिया की जानकारी लेकर और हमारी टीचर की सहयोग से नामांकन करवा लिया। मुझे खुशी है कि अब हम सब अपनी पढ़ाई पूरी कर पाएँगे।

सब कुछ ठीक चल रहा था लेकिन तभी कोविड–19 महामारी आ गई। महामारी में स्कूल बंद होने के कारण मुझे घर लौटना पड़ा। लॉकडाउन में मां–बाबा का मज़दूरी का काम बंद हो गया और दो वक्त का भोजन जुटाना भी मुश्किल हो गया। परिवार पर ऐसी विपदा पहली बार आई थी। ऐसे समय में गरीब परिवारों के लिए झारखण्ड सरकार ने दीदी किचन शुरू किया। उसमें एक वक़्त का खाना तो मिलने लगा, लेकिन रात के खाने के लिए बहुत दिक्कत हो रही थी। माँ ने गाँव के लोगों से चावल व कुछ पैसा उधार लिया और किसी तरह रात को सूखे चावल खाने का इंतजाम हुआ। इस तरह समय बिताने लगे। कर्ज़ उतारने के लिए माँ लोगों के घरों एवं खेतों में काम करने लगी और मैं घर संभालने लगी। इस दौरान मेरी पढ़ाई पूरी तरह रुक गई। Digi-SATH से जुड़ने और पढ़ाई जारी रखने का पूरा मन था लेकिन मेरे पास मोबाइल नहीं था। फिर मैंने अपने ही गाँव की एक दीदी के घर रहना शुरू कर दिया। वह पढ़ाई में मदद करती हैं और मोबाइल से Digi-SATH के साथ जुड़कर ऑनलाइन क्लास भी करने देती हैं। मैंने दीदी से निवेदन कर अन्य तीन सहेलियों को भी ऑनलाइन क्लास में जोड़ लिया। इस तरह हम सबकी पढ़ाई जारी है। मैं सभी किशोरियों से कहना चाहती हूँ कि वे इस मुश्किल वक़्त में हिम्मत न हारें। मुश्किलों का सामना करते हुए अपने आसपास मोबाइल वाली सहेलियों से जुड़कर हर हाल में पढ़ाई जारी रखें। हमें लक्ष्य को पाने के लिए खुद ही रास्ता निकालना होगा।

यूएचएस सहरडाल के शिक्षकों की सराहनीय पहल

"मेरा नाम वीरेन मंडल है। मैं यूएचएस सहरडाल में प्रधानाध्यापक के पद पर कार्यरत हूँ। यह सच है कि कोविड–19 जैसी आपदा का सामना हमने अपने जीवन में पहले कभी नहीं किया। लॉकडाउन के दौरान जब स्कूल खोलने की बात उठी, तो सभी शिक्षकों में डर बढ़ गया। शिक्षकों के फोन आने लगे कि इस विषम परिस्थिति में स्कूल में कैसे काम करेंगे। उनके मन में खुद के अलावा परिवार के लिए ज़्यादा डर था। छात्रों की पढ़ाई किसी तरह शुरू हो, इसके लिए सरकार की तरफ से Digi-SATH कार्यक्रम शुरू करने का आदेश जारी हुआ। हमारे मन में भी छात्रों के लिए कुछ करने की इच्छा थी। स्कूल में आकर छात्रों के साथ डिजिटली जुड़कर उन्हें पढ़ाने की शुरुआत करना काफी चुनौतीपूर्ण लग रहा था, क्योंकि यह एक नई पहल थी। इस कार्यक्रम के तहत स्कूल आने वाले सभी छात्रों को जोड़ना था। हमारे शिक्षकों ने डर को काबू में करते हुए इसके लिए अभियान चलाया। सभी छात्रों से फोन पर संपर्क किया, लेकिन अधिकांश छात्रों या उनके अभिभावकों के पास उपयुक्त फोन नहीं था। कुछ अभिभावकों को तो बार–बार फोन पर समझाया गया कि कैसे जुड़ें, लेकिन वे Digi-SATH प्रोग्राम की रूपरेखा नहीं समझ पा रहे थे। काफी प्रयास के बाद कुछ छात्र कार्यक्रम से जुड़े, लेकिन अपेक्षित सफलता नहीं मिल पा रही थी। स्कूल बंद होने के कारण छात्रों में पढ़ाई के प्रति रुचि और सक्रियता में भी कमी आ गई। ऐसे में शिक्षकों के सामने पढ़ाई के लिए विषयवस्तु तैयार करना और उसे ऑनलाइन भेजना किसी चुनौती से कम नहीं था, लेकिन हमारे शिक्षकों ने हिम्मत न हारते हुए सभी चुनौतियों का डटकर सामना किया। उन्होंने गाँव–गाँव जाकर छात्रों एवं अभिभावकों से बात की और छात्रों को Digi-SATH से जुड़ने के लिए प्रेरित किया। अब हम गर्व के साथ कह सकते हैं कि हमारी टीम ने अपने छात्रों को Digi-SATH से जोड़ने में कुछ हद तक सफलता पा ली है।

मेरा मानना है कि स्कूल में मध्यान भोजन न मिल पाने का बहुत विपरीत प्रभाव कुछ बच्चों पर पड़ा है। जब स्कूल में मध्यान भोजन मिलता था तो बच्चे भरपेट खाना खाते थे। अब कोरोना के कारण सभी को कुछ पैसा और चावल दिया जा रहा है। मध्यान भोजन का चावल तो बच्चों को खाना के रूप में मिल रहा है, लेकिन पैसा अभिभावक बच्चों के पोषण में नहीं लगा रहे हैं। हमारे शिक्षक गाँव–गाँव जाकर छात्रों को मिड डे मील के लिए जरूरी चीजें एवं किशोरियों को सेनेटरी पैड पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। गाँव–गाँव जाना बहुत जोखिमपूर्ण था और अब भी है। इसकी एक बड़ी वजह यह है कि गाँवों में बहुत कम लोग मास्क का उपयोग करते दिखाई देते हैं। इसके बावजूद लोगों को जागरूक करना एवं बच्चों तक मध्यान भोजन का सामान पहुँचाना हमने अपना फर्ज समझा। हमारे स्कूल के सभी शिक्षकों ने चंदा के माध्यम से पैसा जुटाकर पूरे गाँव में 3 क्विंटल चावल ज़रूरतमंदों के बीच बंटवाया।

इस समय हमारे स्कूल में हर दिन 25 छात्रों को बुलाकर उन्हें पढ़ाई की किट दी जा रही है। इस किट में कॉपी, पेंसिल, पेन, जियोमेट्री बॉक्स और स्कूल यूनिफॉर्म शामिल है। इन सभी कामों में हमारी स्कूल प्रबंधन समिति अहम भूमिका निभा रही है। स्कूल बंद होने के बावजूद दो बार स्कूल प्रबंधन समिति की बैठक हुई। अंत में हम कह सकते हैं कि हमारे शिक्षक हर समस्या को चुनौती देकर अपना पूरा उत्तरदायित्व निभा रहे हैं।"

यह कहानियाँ जेम्स कार्यक्रम के अंतर्गत बने "जेम्स कॉमिक बुक" पर आधारित हैं। जेम्स और उमंग कार्यक्रम के बारे में और जानकारी के लिए, आई. सी. आर. डब्लयु. (ICRW) से संपर्क करें।

आभार

उमंग कार्यक्रम के समर्थन के लिए हम आईकीया (IKEA) फॉउण्डेशन के आभारी हैं।

इस पत्रिका की रचना और प्रसार में हमारे स्थानीय भागीदारों – साथी (गोड्डा), प्रोजेक्ट कंसर्न इंटरनेशनल एवं बदलाव फॉउण्डेशन (जामताड़ा) – के सहयोग लिए हम उन्हें धन्यवाद देते हैं।

उमंग वाणी की कल्पना और लेखन में उमंग टीम के इन सदस्यों का महत्वपूर्ण योगदान रहा – **आई.सी.आर.डब्लयु. –** डॉ. रवि वर्मा, अमाजित मुखर्जी, प्रणीता अच्युत, डॉ. नसरीन जमाल, राजेन्द्र सिंह, तन्वी झा, पारस वर्मा, नलिनी वी. खुराना, बिनीत झा, त्रिलोकी नाथ, शक्ति घोष, केतकी नागाराजू, **प्रोजेक्ट कंसर्न इंटरनेशनल –** अंकिता कशिश, नवाब परवेज, पूनम कुमारी, संजीव सिंह, अनीता कुमारी, **साथी –** डॉ. नीरज कुमार, नेहा सरकार, बिभाष झा, सुबोध माझी, **बदलाव फॉउण्डेशन –** अरविन्द कुमार, दिनेश यादव, देबाशीष दास, रामरूप सिंह।

इस न्यूज़लेटर के बारे में जानकारी के लिए इन्हें संपर्क करें –

संपर्क व्यक्ति	संस्था का नाम	मोबाइल नंबर
डॉ. नसरीन जमाल	आई.सी.आर.डब्लयु.	9431391359
सुश्मिता मुखर्जी	पी. सी. आई.	8920132942
डॉ. नीरज कुमार	साथी	7004905488
अरविन्द कुमार	बदलाव फॉउण्डेशन	8210932507

ICRW Ranchi Office:
405, 4th Floor, Krishna Mall, Ashok Nagar,
Between Road No. 1&2, Opposite Central GST Office,
Ranchi - Jharkhand - 834002
Tel. - 0651-2244416/2244417

ICRW Asia Regional Office:
C-59, South Ext. Part II, New Delhi-110049
Tel. : 91-11-4664.3333 ,
Fax : 91-11-2463.5142
Email : Info.india@icrw.org

Design By:
Inzenius Consultancy Services Pvt. Ltd./2020/10